जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

मई 2024

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

मई, 2024

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-451 वर्ष : 38 अंक : 10 मई 2024

आवरण : साई अतुल

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

अतिथि संपादक : अनिल यादव

इस अंक में

अतिथि संपादकीय
4. एकाग्रता का अपहरण : अनिल यादव

अपना मोर्चा
6. पत्र

लंबी कहानी
10. सतरूपा : शिवेन्द्र

कहानियां
30. बीसेक बरस बाद प्रेम : अलका सरावगी
35. चुन्नू, एमेले कैंडिडेट : निहाल पराशर
45. सामंजस्य : राकेश कुमार मिश्र
53. काली चिड़िया : आदित्य शुक्ल
60. रेत की किताब : खोर्खे लुई बोर्खेस (स्पेनिश कहानी) (अनुवाद एवं एक निजी पाठ : योगेंद्र आहूजा)

यात्रा-1
68. लोहे का कटोरा : स्वप्न और दुश्चिंताएं : पायर स्टालबर्ग

यात्रा-2
74. हमाम के नीले गुंबद पर मचलती लहरें : अखिल रंजन

संस्मरण
77. गहरे हरे रंग की गोभी : आशीष भारद्वाज

स्त्री विमर्श
86. औरत की चाहतों के नक्शानवीस : सपना चमड़िया

तकनीक
89. मनुष्य की आत्मा खींच रहा है कैमरा : सौरभ श्रीवास्तव

सिनेमा
92. कॉर्पोरेट हिंदुत्व की चित्रपट शाखा : अविनाश दास

पाठकीय
96. पाठकों की शान में कुछ शब्द : महेश मिश्र

ऋषिवर के नोट्स : दीपक तिरुवा
9, 34, 59, 67, 85, 88, 98.

एकाग्रता का अपहरण

अनिल यादव

आम चुनाव हो रहे हैं. विपक्ष बोरे में है और सत्तापक्ष, रामजी से झपटे गए, कॉर्पोरेट के डैनों से सज्जित पुष्पक विमान पर. विपक्ष के नेताओं को गिरफ्तार कर, पार्टियों के फंड पर ताला मारकर, उम्मीदवारों को ईडी-सीबीआई से धमकाकर, केंचुआ (केंद्रीय चुनाव आयोग) की निगरानी में बोरा-दौड़ में लगा दिया गया है जिससे उड़ती धूल के ऊपर विमान मंडरा रहा है. ये लोक के राम नहीं हैं. ये बस एक आधुनिक चरित्र है जिसकी लेखक सत्ताधारी पार्टी है. दोनों के बीच के फर्क को थूक से रगड़कर आपस में मिला देना ही उसकी राजनीति रही है. पटकथा से पता चलता है कि ये वाले राम अयोध्या आ नहीं पाए थे, उन्हें लाया गया है. उनमें प्राण नहीं थे, प्राण-प्रतिष्ठा की गई है. अब शीशा चमकाकर टीका लगाने के बाद, आखिरी बार जितना संभव है लोगों की आस्था को निचोड़कर वोटों में बदलने का काम जारी है. कार्पोरेट का खजाना, दस साल के 'पुण्य', गोदी मीडिया के कीर्तन और धर्म के पैर मरोड़कर अपनी राजनीति के जूते पहना देने के बाद भी इस चुनाव में कोई रौनक नहीं है.

महामानव, अपने पद से फिसलकर सांप्रदायिक-ध्रुवीकरण की खुराफात के साथ अत्याचार के मारे गरीब की तरह आर्तनाद भी कर रहे हैं और मतदान का प्रतिशत गिर रहा है. संकेत है कि उनके हिंदुत्व की लहर जितनी ऊंची उठनी थी, उठ चुकी. अब नीचे आना है. हो सकता है कि उसे वहीं टिकाए रखने के लिए आगे डंडे के जोर से जनता को आसमान की ओर ताकते हुए मीटर और अंगुल में ऊंचाई का वर्णन करने को कहा जाए. यह भी हो सकता है कि चुनाव के बाद जनता कहने लगे कि लहर तो वही है लेकिन आपके विकास की आंधी ने हमें इतना ऊंचा उड़ा दिया है कि कुछ साफ दिखाई नहीं दे रहा. एक पाकिस्तानी कहानी में, एक फिदाईन, मरने के बाद जन्नत से इतना आगे निकल गया था कि उसे मानना पड़ा, बारूद ज्यादा भर दिया गया होगा.

जो भी हो लेकिन एक बात तय है, जनता अब अपने नुमाइंदे क्या दंतखोदनी (टूथपिक) भी चुनने के लिए पहले जितनी स्वतंत्र और निर्णायक नहीं रही. संतुलन बदल गया है. सिक्का उनका चलने लगा है जो दिमागों को नियंत्रित करने के हाईटेक कारखाने चलाते हैं.

बैनर-बिल्ला-भोंपू के अलावा वोटरों और उनके बच्चों के उत्साह से होने वाली रौनक के न होने का एक और कारण यह है कि अब चुनाव जमींन पर कम, इंटरनेट की हवा से डोलने वाली आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) या सोशल मीडिया में ज्यादा लड़े जाते हैं. उस जगह से वोटरों के मन में सेंध मारी जाती है क्योंकि अब वे ज्यादातर वक्त वहीं पाए जाते हैं. वहां उन चीजों का यकीन दिलाना चुटकियों का खेल है जिनका अस्तित्व वास्तविक दुनिया में है ही नहीं. कंठी-माला के भार से झुके, कद्दू-पूड़ी खाते डायनासोर को महाद्वीपों का नायक बना देना बाएं हाथ का खेल है. विश्वामित्र एक समानांतर दुनिया बनाने की कोशिश में त्रिशंकु हो गए होंगे लेकिन तकनीक ने सफलतापूर्वक बना दी है और लोग वहां बस भी चुके हैं. पहाड़ की चोटियों से लेकर मैदान के खेतों, रेगिस्तान के धोरों से होते हुए समुद्र के किनारे तक जहां-जहां इंटरनेट की कनेक्टिविटी है मोबाइल फोनों में खोए नौजवानों के झुंड प्रवासी पक्षियों की तरह बैठे दिखने लगे हैं. ऐसा लगता है कि इन जगहों पर कोई नरम चारा है जिसे वे अपनी आंखों से चुग रहे हैं. इस दृश्य से कुछ पहले रिटायर्ड, निठल्ले बूढ़ों के लिए एक संबोधन प्रचलित हुआ था 'व्हाटसैप अंकल' जो मुगलों-मुसलमानों के प्रति घृणा के प्रचारक हो गए